देश की खेल सफलता के असली नायक - शारीरिक शिक्षा के अध्यापक

अवधेश कुमार श्रोत्रिय
क्रीड़ा अधिकारी, बिरला इंस्टिट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट टेक्नोलॉजी, ग्रेटर नॉएडा
सचिव प्ले इन्डिया प्ले (ट्रस्ट)

Offline Citation: - Shirotriya, A.K. (Novemeber,2014). *Editorial Column*, Sports Kreeda News Paper, 3 (3), 04. **Online Citation: -** http://www.news4city.com/sports-kreeda-nov-2014/

अभी पिछले दिनों एक हिंदी के अख़बार में पी. टी. उषा के बारे में मैंने एक लेख पढ़ा जिसमे उनके खेल जीवन के बारे में विस्तृत रूप से बताया गया था / पी टी. उषा की काबिलियत और जज्बे को उनके विद्यालय के शारीरिक शिक्षा के अध्यापक ने पहचाना था और उस अध्यापक के प्रेरणा स्वरुप साधारण पी. टी उषा ने पूरी दुनिया के समक्ष असाधारण "उड़न परी" के रूप में स्वयं को धावन पथ पर साबित कर दिखाया /

पी. टी. उषा जैसे कई अनमोल भारतीय खेल रत्न अंतर्राष्ट्रीय मानचित्र पर स्वर्णिम अक्षरो से भारत का नाम दर्ज किये हुए हैं, जो की किसी न किसी शारीरिक शिक्षा के अध्यापक के मार्गदर्शन व् हुनर की देन हैं /

एक पुरानी कहावत के अनुसार "पूत के पैर पालने में ही दिख जाते हैं" ठीक उसी प्रकार नौनिहाल खेल प्रतिभाओ की पहचान भी प्रारंभिक रूप से शारीरिक शिक्षा के अध्यापक के द्वारा ही हो पाती हैं , अगर एक कुशल शारीरिक शिक्षा के अध्यापक को बालयकाल की अवस्था से कोई प्रतिभावान बच्चा मिल जाये तो निश्चित रूप से अपने कौशल से तथा अपने ज्ञान से वह अध्यापक उस बच्चे को देश की खेल धरोहर के रूप में पेश कर सकता हैं / जिस प्रकार एक जोहरी अपनी मेहनत के द्वारा हीरे की खूबसूरती को निखआरता हैं ठीक उसी प्रकार शारीरिक शिक्षा के अध्यापक उभरती हुई खेल प्रतिभाओ को अपने ज्ञान एवं कौशल से परिपूर्ण कर देते हैं /

गामक योग्यता (मोटर स्किल्स) की सही पहचान एक शारीरिक शिक्षा का अध्यापक ही बेहतर रूप से कर सकता हैं / स्पीड, फ्लेक्सिबिलिटी, एन्दुरेन्स , स्ट्रेंथ एवं कॉर्डनिटिव अबिलिटीएस जैसी प्रमुख गामक योग्यताएं खिलाडी के लिए किसी भी खेल में "संजीवनी बूटी" का काम करती हैं बिना गामक योग्यताओ के कोई भी खेल अथवा शारीरिक क्रिया कुशलता पूर्वक कर पाना संभव नहीं हो पाता हैं / शारीरिक शिक्षा के अध्यापक का कार्य गामक योग्यताओ को पता करने तक ही सिमित नहीं होता हैं अपितु उन गामक योग्यताओ के विकास के लिए नए नए ट्रेनिंग प्रोग्राम भी देने का होता हैं /

आज वैश्विक खेल मंच पर भारत अच्छा प्रदशन कर पूरी दुनिया के आगे मजबूत खेल शक्ति के रूप में उभर रहा हैं ,जहा एक और क्रिकेट में भारत की

बादशाहत बरक़रार थी आज वहीं कुश्ती , कबड्डी, स्क्वाश जैसे खेलो में भी भारतीय खिलाडी बेहतर प्रदशन कर रहे हैं /

रोमांच से भरपूर खेल क्षेत्र में रोजगार के अपार विकल्प मौजूद होने की वजह से कई खेल प्रतिभाएं भी निकल निकल के आगे आ रही हैं ऐसे में अगर प्राथमिक विद्यालयों में योग्य शारीरिक शिक्षा के अध्यापक एवं कोच लगातार सही मार्गदर्शन एवं सुविधाएं सुविधाएं प्रदान करते रहे तो वो दिन दूर नहीं जिस दिन अंतर्राष्ट्रीय खेल प्रतियोगोताओ की पदक तालिका में भारत शीर्ष स्थान पर कब्ज़ा जमा लेगा/

शारीरिक शिक्षा के अध्यापक का कार्य क्षेत्र भी बड़ा व्यापक होता हैं , वह न केवल एक अध्यापक की भूमिका अदा करता हैं बल्कि इस क्षेत्र में बेहतर खिलाडी तैयार करने के लिए कोच, ट्रेनर, डॉक्टर, अभिभावक, शोधार्थी एवं मित्र की भूमिका भी अदा करनी पड़ती हैं शारीरिक शिक्षा के अध्यापक को/